IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मेवाड़ के सिक्कों में धार्मिक प्रतीक और उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

हिमांशु मीणा[1], डॉ. पंकज आमेटा[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर

[2]सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर

सारांश

मेवाड़ के सिक्के केवल आर्थिक लेन-देन का माध्यम नहीं थे, बल्कि वे अपने समय की धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना के भी साक्षी थे। इस शोध का उद्देश्य मेवाड़ के सिक्कों में प्रयुक्त धार्मिक प्रतीकों की पहचान करना, उनकी सांस्कृतिक व्याख्या करना और उनके माध्यम से तत्कालीन समाज की धार्मिक चेतना को समझना है। अध्ययन में त्रिशूल, नंदी, स्वस्तिक, जैन तीर्थंकर, 'श्री' आदि जैसे प्रतीकों को विश्लेषित किया गया है। शोध पद्धति में संग्रहालयीय सिक्कों का अवलोकन, दृश्य विश्लेषण (Iconographic Analysis), तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन तथा ऐतिहासिक ग्रंथों और पुरालेखों की समीक्षा शामिल है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मेवाड़ के शासकों ने अपने सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकों का उपयोग कर न केवल धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया, बल्कि राजसत्ता की वैधता को भी सांस्कृतिक रूप में प्रस्तुत किया। यह शोध दर्शाता है कि सिक्के एक गतिशील सांस्कृतिक संदेशवाहक थे, जिनके माध्यम से शासक धर्म, सत्ता और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करते थे।

मुख्य शब्द: *मेवाड़, सिक्काशास्त्र, धार्मिक प्रतीक, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, शाही सिक्के,सिसोदिया वंश, राजसत्ता और धर्म।*

1. प्रस्तावना

मेवाड़ भारत के प्राचीनतम और गौरवशाली राजपूत राज्यों में से एक रहा है, जिसकी स्थापना आठवीं शताब्दी में बप्पा रावल ने की थी। इसने शताब्दियों तक अपनी स्वतंत्र और सुदृढ़ पहचान बनाए रखी और भारतीय इतिहास में एक राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में अग्रणी भूमिका निभाई। सिसोदिया वंश के वीर शासकों ने विदेशी आक्रमणकारियों, विशेषकर दिल्ली सल्तनत और मुग़लों के विरुद्ध लगातार संघर्ष कर स्वराज्य की भावना को जीवित रखा। यद्यपि मेवाड़ एक हिन्दू बहुल राज्य था, फिर भी यहाँ बौद्ध और जैन धर्म को भी संरक्षण प्राप्त हुआ। धार्मिक सहिष्णुता इसकी परंपरा में अंतर्निहित थी, जिसका प्रमाण इसके स्थापत्य, समाज और मुद्रा-प्रणाली में भी परिलक्षित होता है।

इतिहास में शासन केवल सैन्य बल से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उपकरणों के माध्यम से भी स्थापित होता रहा है। इसी क्रम में सिक्के शासकीय विचारधारा और धार्मिक संदेशों के प्रसार का एक प्रभावी माध्यम बने। मेवाड़ के सिक्कों पर अंकित धार्मिक प्रतीकों ने शासन की शक्ति, आस्था और वैधता को जनता तक पहुंचाया। आरंभिक सिक्कों पर मानव, पशु-पक्षी, वृक्ष, सूर्य और चंद्रमा जैसे प्रतीकों का अंकन मिलता है, जो उस समय की धार्मिक धारणाओं के द्योतक थे। मध्यकालीन काल में शासकों ने त्रिशूल, नंदी, स्वास्तिक, जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं और 'श्री' जैसे शब्दों को अपनी मुद्राओं पर अंकित कर इन्हें धार्मिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्थापित किया।

भगवान शिव का त्रिशूल मेवाड़ के कुलदेव एकलिंगजी की आराधना का प्रतीक है, जो राज्य की धर्मरक्षा की नीति को दर्शाता है। नंदी बैल की आकृति शिवभक्ति, स्थिरता और प्रजावत्सलता का प्रतीक है। स्वास्तिक चिह्न शुभता, समृद्धि और कल्याण का प्रतीक है, जिसे सिक्कों पर अंकित कर शासक जनता के लिए मंगलकामना प्रकट करते थे। जैन धर्म के प्रतीकों की उपस्थिति – जैसे तीर्थंकर प्रतिमा या 'केसरियाजी' जैसे तीर्थों का उल्लेख – मेवाड़ की बहुधार्मिक नीति और सहिष्णु दृष्टिकोण को दर्शाता है।

बप्पा रावल द्वारा जारी किए गए स्वर्ण मुद्राओं में त्रिशूल, नंदी, कामधेनु और शिव की आकृतियों के अंकन से स्पष्ट है कि सत्ता की वैधता को धार्मिक आधार प्रदान करने की परंपरा उसी समय से स्थापित हो चुकी थी। बाद के शासक जैसे राणा कुंभा, राणा सांगा आदि ने भी इसी परंपरा का अनुसरण किया। कुंभा के सिक्कों पर नागरी लिपि में 'श्री एकलिंग' अंकित किया गया, जबकि राणा सांगा के सिक्कों पर स्वास्तिक और त्रिशूल जैसे प्रतीकों के साथ-साथ इस्लामी शैली में फारसी लिपि में सुलेख भी मिलता है, जो धार्मिक पहचान और राजनीतिक यथार्थ के समन्वय का परिचायक है। यह इंगित करता है कि मेवाड़ के शासक भले ही मुस्लिम शासन के अधीन आ गए हों, किंतु उन्होंने अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक अस्मिता को जीवित रखा।

एक महत्वपूर्ण उदाहरण 1616 ईस्वी के एक दुर्लभ सिक्के में मिलता है, जिसमें एक ओर 'कुंभलमेरू' और दूसरी ओर 'जैन तीर्थ केसरियाजी' अंकित है। यह सिक्का न केवल धार्मिक सहअस्तित्व का प्रतीक है, बल्कि शासक की सूझबूझ और सांस्कृतिक राजनयिक समझदारी को भी दर्शाता है। यह संकेत देता है कि मेवाड़ की राजसत्ता न केवल शस्त्रबल पर टिकी थी, बल्कि सांस्कृतिक सहिष्णुता और धार्मिक समरसता पर भी आधारित थी।

मेवाड़ के सिक्कों की विविधता और उन पर अंकित प्रतीकों की गहराई इस बात का प्रमाण है कि सिक्के उस युग के धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्श के संवाहक रहे हैं। ये सिक्के शासक की धार्मिक निष्ठा, राजधर्म, प्रजा के प्रति कल्याणभावना, और अंतरधार्मिक समन्वय की नीतियों को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए प्रभावी माध्यम बने। इन प्रतीकों की ऐतिहासिक निरंतरता यह दर्शाती है कि सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को राजकीय संरचना के भीतर किस प्रकार आत्मसात किया गया।

इस प्रकार सिक्काशास्त्र केवल आर्थिक इतिहास का अध्ययन नहीं, बल्कि समाज के सांस्कृतिक-सांकेतिक विमर्श को समझने का एक जीवंत माध्यम है। मेवाड़ के सिक्के न केवल उस क्षेत्र की कला, धर्म और राजनीति का प्रतिबिंब हैं, बल्कि वे एक बहुलतावादी, सहिष्णु और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य की पहचान भी हैं। यह अध्ययन वर्तमान पीढ़ी को न केवल अपनी ऐतिहासिक विरासत से जोड़ता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों की भूमिका सत्ता और समाज के बीच संवाद स्थापित करने में कितनी महत्वपूर्ण होती है।

2. अनुसंधान के उद्देश्य

1. मेवाड़ के सिक्कों पर प्रयुक्त धार्मिक प्रतीकों की पहचान करना।
2. इन धार्मिक प्रतीकों की सांस्कृतिक व्याख्या करना।
3. सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन समाज की धार्मिक चेतना का विश्लेषण करना।

3. स्रोत सामग्री और पद्धति

इस अध्ययन की प्रामाणिकता ऐतिहासिक, पुरातात्विक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों के समन्वित विश्लेषण पर आधारित है।

i. संग्रहालयीय सिक्कों का अध्ययन:

प्राथमिक स्रोत के रूप में उदयपुर के भारतीय लोक कला मंडल संग्रहालय, सिटी पैलेस संग्रहालय और राजकीय संग्रहालय में संरक्षित सिक्कों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया। इन सिक्कों पर त्रिशूल, नंदी, स्वास्तिक , जैन प्रतिमा आदि धार्मिक प्रतीकों की पहचान कर उनका चित्रात्मक दस्तावेज़ तैयार किया गया। साथ ही निजी संग्राहकों से भी सिक्का-सामग्री प्राप्त की गई।

ii. पुरालेख और ग्रंथों का अध्ययन:

सिक्कों की धार्मिक व्याख्या हेतु ए.एस. अल्तेकर, उपिंदर सिंह, जॉन डेयल जैसे विद्वानों के ग्रंथों सहित स्कंद पुराण, शिवपुराण, जैन आगम, और वैदिक साहित्य से सैद्धांतिक संदर्भ लिए गए। साथ ही, मेवाड़ के ऐतिहासिक ग्रंथों और शोध आलेखों का विश्लेषण भी किया गया।

iii. दृश्य विश्लेषण विधि:

Iconographic Analysis के तहत प्रतीकों की शैली, रूपांकन और धार्मिक अर्थ की गहराई से व्याख्या की गई। त्रिशूल को शिव की शक्ति और जैन प्रतिमा को जैन धर्म के प्रभाव का द्योतक मानकर उसका कालानुक्रमिक और शासकीय संदर्भ में विश्लेषण किया गया।

iv. तुलनात्मक सांस्कृतिक पद्धति:

मेवाड़ के सिक्कों की तुलना मालवा, गुजरात, मारवाड़ व दिल्ली सल्तनत के सिक्कों से की गई। इससे यह विश्लेषित किया गया कि मेवाड़ की प्रतीक-परंपरा किस प्रकार विशिष्ट थी और उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।

4. मेवाड़ के सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकों का वर्गीकरण

मेवाड़ के ऐतिहासिक सिक्कों पर अंकित विविध धार्मिक प्रतीक उस काल की बहुधार्मिक संस्कृति और राजकीय निष्ठाओं के द्योतक हैं। इन सिक्कों पर हिंदू, जैन तथा इस्लामी परंपराओं से जुड़े चिह्न मिलते हैं, जो मेवाड़ के शासकों की धार्मिक आस्थाओं और सहिष्णुता को दर्शाते हैं। प्रत्येक प्रतीक को सिक्कों पर खास स्थान, कला शैली और रूपरेखा में उकेरा गया है, जिनके माध्यम से सांस्कृतिक या धार्मिक संदेश प्रसारित होता था। निम्न में मेवाड़ के सिक्कों पर प्रमुख प्रतीकों – हिंदू, जैन तथा इस्लामी – का विवरण एवं विश्लेषण प्रस्तुत है।

❖ **हिंदू प्रतीक (त्रिशूल, स्वास्तिक, नंदी, लक्ष्मी, सूर्य)**

त्रिशूल – मेवाड़ के सिक्कों पर त्रिशूल का चिह्न बार-बार प्रयुक्त हुआ है। त्रिशूल भगवान शिव का पारंपरिक आयुध है, जिसका प्रयोग शक्ति और संरक्षा के प्रतीक रूप में हुआ। महाराणा सांगा के काल के तांबे सिक्कों पर त्रिशूल अंकित मिलता है। इसे अक्सर सिक्के के केंद्रीय या ऊपरी भाग में दर्शाया गया, तीन नुकीले शूलों वाला यह चिह्न सरल रेखांकन शैली में उकेरा गया है। त्रिशूल का सिक्कों पर होना मेवाड़ के इष्टदेव एकलिंगजी (शिव) के प्रति श्रद्धा और राज्य की संप्रभुता को दर्शाता था।

चित्र: त्रिशूल और नंदी सहित 2 पैसे का सिक्का

उदाहरणस्वरूप, राणा कुंभा (1433–1468) के सिक्कों पर नागरी लिपि में 'श्री एकलिंग' नाम खुदा था, जो मेवाड़ राजवंश के आराध्य शिव का स्मरण कराता है। त्रिशूलिया नामक स्थानीय तांबे के सिक्के पर तो सीधे त्रिशूल का प्रतीक ही प्रमुख रूप से दिखता था, जिससे स्पष्ट है कि यह चिह्न सिक्कों की पहचान का हिस्सा बन गया था। हिंदू धारणा में त्रिशूल धर्म, अर्थ, काम के संतुलन का भी द्योतक है, अतः इसका प्रयोग शासकों द्वारा राज्य के धार्मिक आधार को मजबूत रूप में दिखाने हेतु किया गया होगा।

चित्र: राणा कुंभा के तांबे के सिक्के (1433–1468 ई.)

स्वास्तिक – स्वास्तिक प्राचीन सूर्य-प्रतिनिधि शुभ चिह्न है, जिसका प्रयोग हिंदू ही नहीं जैन परंपरा में भी सौभाग्य के प्रतीक के रूप में होता आया है। मेवाड़ के सिक्कों पर स्वास्तिक का अंकन विशेषतया मंगलचिह्न के रूप में किया जाता था। महाराणा सांगा के सिक्कों पर त्रिशूल के साथ-साथ स्वास्तिक भी प्रकट होता है, जिससे स्पष्ट है कि युद्धवीर राजपूत नरेश भी सिक्कों द्वारा देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्रकट करना चाहते थे। स्वास्तिक को सिक्कों पर प्रायः छोटे आकार में, चारों भुजाएँ घड़ी की दिशा में मुड़ी हुई, केंद्र के निकट उत्कीर्ण किया गया है। यह चिह्न सिक्के की रूपरेखा में संतुलित ढंग से कहीं कोने या खाली स्थान में जोड़ा जाता था ताकि सौभाग्य का संदेश संप्रेषित हो। स्वास्तिक का सांस्कृतिक अर्थ मंगल, समृद्धि और संरक्षण से जुड़ा है; अतः इसे राजमुद्रा पर अंकित कर राज्य की समृद्धि व शासक की धार्मिक सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जाता था। स्वास्तिक का अंकन यह भी दिखाता है कि मेवाड़ के शासक स्वयं को प्रजा के रक्षक एवं धर्मपालक मानते थे।

नंदी (बैल) तथा गाय – हिंदू धर्म में नंदी-बैल भगवान शिव के वाहन एवं धर्म के प्रतीक हैं, वहीं गाय पवित्र एवं पोषण की द्योतक मानी जाती है। मेवाड़ के कई प्राचीन सिक्कों पर गाय अथवा बैल की आकृतियाँ मिलती हैं। इन पशु प्रतीकों की उपस्थिति सनातन धर्म की जड़ों को इंगित करती है। सिक्कों पर नंदी को सामान्यतः बैठी हुई अवस्था में पार्श्व दृश्य में उकेरा जाता था, जिसका मुख दाहिनी ओर होता था – यह रूपांकन शिव के प्रति भक्ति तथा राजवंश के एकलिंगजी मंदिर के साथ संबंध को दर्शाता है। उदाहरणस्वरूप, बप्पा रावल (8वीं सदी) द्वारा जारी एक स्वर्ण मुहर पर मेवाड़ के इष्टदेव एकलिंगजी (शिव) की आकृति बनी मिली है, जिसके निकट नंदी भी अंकित होने के संकेत हैं। इसी तरह कुछ सिक्कों पर सीधे गाय का चित्र मिलता है, जो कृषि सम्पन्नता और धर्मपालन का संदेश देता था। गाय को हिंदू धर्म में माता का दर्जा प्राप्त है, अतः सिक्कों पर गौ-अंकन प्रजा के कल्याण एवं राज्य के धर्मपरायण होने का प्रतीक था। शैली की दृष्टि से, प्रारंभिक मेवाड़ी सिक्कों पर पशु आकृतियाँ सरल रेखाओं और बिंबों द्वारा बनी हैं, जिनमें मात्र आवश्यक अंगों को दर्शाया गया है। धार्मिक संदेश के तौर पर नंदी और गौ के चिह्न शासक की शिव-भक्ति, धर्मरक्षा तथा प्रजा के पोषण का संकल्प प्रदर्शित करते थे।

लक्ष्मी – लक्ष्मी हिंदू धर्म में धन-समृद्धि की देवी हैं, जिन्हें श्री के नाम से भी अभिहित किया जाता है। मेवाड़ सहित प्राचीन भारत के अनेक सिक्कों पर देवी लक्ष्मी के प्रतीकात्मक निरूपण मिलते हैं। खास तौर पर "श्री" शब्द का अंकन मेवाड़ के सिक्कों पर पवित्रता और आदर का सूचक माना जाता था। श्री शब्द स्वयं लक्ष्मी का द्योतक है, अतः सिक्कों पर श्री लेख अंकित कर शासक देवी लक्ष्मी की कृपा से राज्य की समृद्धि की कामना जताते थे। मेवाड़ के कुछ मध्यकालीन सिक्कों पर लक्ष्मी की पूर्ण या आंशिक आकृति उकेरी गई होने के संकेत मिलते हैं। उदाहरणस्वरूप, गुहिला वंश के आरंभिक काल में वैष्णव प्रभाव के तहत कुछ सिक्कों पर संभवतः लक्ष्मी की बैठी मुद्रा या कमल पर स्थित आकृति अंकित की गई होगी, जैसा समकालीन उत्तर भारतीय राजवंशों में प्रचलित था। यद्यपि उपलब्ध साक्ष्यों में मेवाड़ के अधिकतर सिक्कों पर सीधे लक्ष्मी प्रतिमा नहीं मिली, परंतु श्री अंकन और अन्य देवी-देवताओं की छवियाँ (जैसे एकलिंगजी) यही दर्शाती हैं कि लक्ष्मी का आध्यात्मिक आशिष सिक्कों के माध्यम से राज्य पर व्यक्त किया गया। सिक्कों पर लक्ष्मी संबंधी प्रतीक राज्य की आर्थिक समृद्धि, शुभ-लाभ और शासक की धर्मपरायण छवि को उजागर करते थे।

सूर्य – सूर्य मेवाड़ राजवंश (सिसोदिया) के कुलदेवता और सूर्यवंशी विरासत के प्रतीक थे। अतः सिक्कों पर सूर्य का चिह्न अंकित करना स्वाभाविक था। कई मेवाड़ी सिक्कों में छोटा गोलाकार चिह्न बनाकर उसके चारों ओर किरणों जैसी रेखाएँ उकेरी गई हैं, जो सूर्य का प्रतीक है। प्रारंभिक काल के कुछ सिक्कों पर सूर्य एवं चंद्रमा दोनों के चित्र मिलते हैं, जहाँ सूर्य को उभारकर दर्शाया गया और किरणों द्वारा पहचान सुनिश्चित की गई। सूर्य का प्रतीक सिक्के पर प्रायः ऊपरी भाग में या केंद्रीय महत्व के साथ दिया जाता था, ताकि राजवंश की सूर्यवंशी पहचान स्पष्ट हो। कला की दृष्टि से, सिक्कों पर सूर्य कभी एक मानवीय मुखमंडल और मूंछों सहित (राजपूती शैली) भी दर्शाया गया है – जैसे मेवाड़ राजपरिवार के शाही ध्वज पर होता था – हालाँकि साधारणतया सिक्कों पर सूर्य केवल एक दर्शनीय गोलाकार रूप में ही अंकित मिलता है। सूर्य-प्रतीक शक्तिस्रोत,

प्रकाश एवं सत्यान्श का द्योतक है; इसे राजमुद्रा पर रखकर मेवाड़ के शासकों ने अपने को सूर्य की तरह तेजस्वी, न्यायप्रिय और वैदिक आदर्शों वाला शासक प्रदर्शित किया। चित्तौड़ की टकसाल से निकले 18वीं सदी के सिक्कों पर तो टकसाल-चिह्न के रूप में सूर्य किरणों का चिह्न प्रयुक्त हुआ – विभाजक रेखा से लटकती किरणों की पंक्ति – जो स्पष्ट रूप से मेवाड़ के सूर्यचिह्न को मुद्रा प्रणाली में शामिल करता है। सांस्कृतिक संदेश के तहत, सिक्कों पर सूर्य अंकित होने का अर्थ था कि राजसत्ता को सूर्यदेव का आशीर्वाद प्राप्त है और राज्य दीर्घायु व सुविख्यात होगा।

❖ **जैन प्रतीक (जैन प्रतिमा, चक्र, अशोक वृक्ष)**

मेवाड़ के सिक्कों पर जैन प्रतीकों का अंकन विशेष रूप से यह दर्शाता है कि समय-समय पर मेवाड़ के शासक जैन धर्म से प्रभावित रहे और उन्होंने अपनी मुद्रा में भी इस धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाया। साक्ष्यों से पता चलता है कि रानी पद्मिनी के जौहर (1303 ई.) की घटना के क़रीब 300 वर्ष बाद मेवाड़ नरेशों का झुकाव जैन मत की ओर बढ़ा था। इसी का परिणाम था कि 17वीं शताब्दी में जैन तीर्थंकरों से जुड़े प्रतीक शाही सिक्कों पर स्थान पाने लगे। इन प्रतीकों में प्रमुख हैं – तीर्थंकर की प्रतिमा या नाम, सिद्धांत चक्र (धर्मचक्र), तथा पूज्य वृक्ष (जैसे अशोक वृक्ष) के संकेत।

जैन प्रतिमा एवं नाम – जैन धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकरों की छवि या उनका उल्लेख मेवाड़ के एक महत्वपूर्ण सिक्के पर मिलता है। सन 1616 ई. के आसपास का एक दुर्लभ तांबे का सिक्का, जो हाल ही में खोजा गया, उस पर देवनागरी लिपि में एक ओर "कुंभलमेरू" (कुंभलगढ़ का तत्कालीन नाम) तथा दूसरी ओर "केसरियाजी" अंकित है। "केसरियाजी" मेवाड़ के धुलेव गांव स्थित प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के प्राचीन मंदिर का लोकनाम है। इस सिक्के पर शासक का नाम अंकित नहीं किया गया, क्योंकि उस दौर में मेवाड़ मुग़ल अधीनस्थ था और अधीन राज्य अपने राजाओं का नाम मुद्रा पर नहीं डालते थे। इसके स्थान पर राजा ने जैन तीर्थ का नाम अंकित कराया – यह एक अभूतपूर्व उदाहरण है जहाँ धार्मिक स्थल को राजकीय सिक्के पर सम्मान दिया गया। इस सिक्के पर सीधे तीर्थंकर ऋषभदेव की प्रतिमा तो अंकित नहीं है, लेकिन केवल नाम अंकित कर देना ही जैन समुदाय के प्रति राजभक्ति और श्रद्धा को प्रकट करता है। इतिहासकारों के मतानुसार, "जिस दौर में जैन तीर्थंकर वाला सिक्का चला, उस समय के मेवाड़ शासक जैन धर्म से खासे प्रभावित थे"। आगे चलकर भी मेवाड़ राज्य के कुछ स्थानीय सिक्कों पर जैन प्रतीक दिखाई देते हैं; जैसे कुछ सिक्कों पर पार्श्वनाथ आदि तीर्थंकरों के चिन्ह अथवा श्रवक के आठ मंगलचिन्ह अंकित होने के संकेत हैं। इनका उद्देश्य धार्मिक सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना और जैन प्रजा की आस्थाओं का सम्मान करना था। सिक्कों पर जैन प्रतीकों की स्थिति अत्यंत गौरवपूर्ण थी – या तो एक तरफ पूरे लेख के रूप में (जैसे केसरियाजी नाम), अथवा प्रतीक चिह्न के रूप में किनारे पर। उनकी रूपरेखा सरल एवं स्पष्ट थी ताकि पहचान में आसानी रहे। इन प्रतीकों का सांस्कृतिक संदेश था कि मेवाड़ राज्य सभी धर्मों को आदर देने वाला है तथा जैन धर्म के अहिंसा, सत्य जैसे सिद्धांतों को महत्व देता है।

धर्मचक्र – जैन एवं बौद्ध परंपरा में धर्मचक्र सत्य के मार्ग और ज्ञान के प्रसार का प्रतीक है। कुछ प्राचीन अथवा मध्यकालीन सिक्कों पर चक्र के निशान भी मिलते हैं, यद्यपि मेवाड़ के विशिष्ट राजसी सिक्कों पर इसकी पुष्टि कम है। फिर भी, जनश्रुति और अप्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर माना जाता है कि जैन प्रभाव के कालखंड में जारी सिक्कों पर षड्भाग नक्षत्र चिह्न अथवा चक्र का चिह्न दिखाई दिया, जो वस्तुतः धर्मचक्र का रूपांकन था। यह चक्र एक वृत्ताकार चिह्न के रूप में होता है, जिसमें अष्ट या अधिक तीलियाँ दर्शायी जातीं। कला शैली में इसे सरल रेखाओं द्वारा उकेरा गया, संभवतः सिक्के के किसी कोने में या मुख्य आकृति के नीचे। धर्मचक्र जिन शिक्षाओं के प्रवर्तन का प्रतीक है, अतः इसका उपयोग शासकों द्वारा जैन धर्म के सत्य-अहिंसा के मार्ग को स्वीकारने के संकेत के रूप में देखा जा सकता है। यह चिह्न सांस्कृतिक सद्भावना का परिचायक भी था – क्योंकि हिंदू परंपरा में भी चक्र विष्णु का प्रतीक है, इस प्रकार एक ही प्रतीक बहु-आयामी धार्मिक अर्थ प्रदान करता था। यद्यपि प्रत्यक्ष सिक्का उद्धरण अल्प हैं, परंतु धर्मचक्र का निहित संदेश मेवाड़ की सहिष्णु नीति को बल प्रदान करता है।

अशोक वृक्ष – पौराणिक मान्यताओं में अशोक वृक्ष को पवित्र तथा कल्याणकारी वृक्ष माना गया है। जैन धर्म में प्रत्येक तीर्थंकर को सम्बद्ध वृक्ष होता है; उदाहरणार्थ प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को वटवृक्ष, तो चौथे तीर्थंकर अभिनंदननाथ को अशोक वृक्ष से जोड़ा जाता है। मेवाड़ के कुछ सिक्कों पर वृक्ष के चित्रांकन मिलते हैं – विशेषकर प्रारंभिक सिक्कों पर वृक्ष को ठूंठ या शाखाओं सहित दिखाया गया है। संभव है कि इनमें से कुछ वृक्ष अशोक वृक्ष का द्योतक हों, जिन्हें शांति और समृद्धि के प्रतीक रूप में अंकित किया गया। सिक्कों पर वृक्ष-प्रतीक की स्थिति सामान्यतः मध्य या पार्श्व में रहती थी और उसके चारों ओर रैलिंग या बाड़ का चित्र भी कभी-कभी उत्कीर्ण थी, जैसा प्राचीन मुद्राओं में देखा गया है। कला

की दृष्टि से, वृक्ष को पतली टहनियों और पत्तियों के समूह द्वारा निरूपित किया गया; कई बार मात्र साररूप में वृक्ष दिखाने के लिए तने से निकलती चार दिशाओं में शाखाएँ बनायी गयीं। अशोक वृक्ष का धार्मिक संदेश था – दुःखों से मुक्ति (अ-शोक = जहाँ शोक न हो) – जो जैन एवं बौद्ध दर्शन का मुख्य तत्व है। मेवाड़ नरेश यदि सिक्कों पर अशोक या अन्य वृक्ष अंकित करते थे तो यह उनकी प्रजा के कल्याण और धर्मसम्मत शासन की कामना का प्रतीक था। साथ ही, वृक्ष प्रकृति और जीवन के संतुलन का परिचायक होने से, यह चिह्न शासक की भूमिपुत्र और प्रजा-पोषक छवि को उजागर करता था। मेवाड़ के प्रचलित सिक्कों में वृक्ष और अन्य प्राकृतिक प्रतीकों की उपस्थिति यह भी दिखाती है कि राज्य की संस्कृति प्रकृति और धर्म के सह-अस्तित्व को मान्यता देती थी।

उपर्युक्त जैन प्रतीक मेवाड़ की धार्मिक सहिष्णुता को प्रत्यक्ष करते हैं। विशेषकर 17वीं सदी का "केसरियाजी" सिक्का एक मिसाल है कि किस तरह मेवाड़ के शासकों ने जैन समुदाय के प्रति आदर प्रकट किया। जहाँ संभव था, संबंधित सिक्कों की छवियाँ भी विभिन्न संग्रहालयों व शोध प्रकाशनों में प्रकाशित हुई हैं – जैसे ओरिएंटल न्यूमिस्मैटिक सोसायटी, लंदन के जर्नल में केसरियाजी सिक्के का विस्तृत वर्णन और छवि प्रकाशित हुई। इन प्रतीकों के जरिए शासक यह संदेश देता था कि उसका शासन ईश्वरीय कृपा और सभी धर्मों के समर्थन से स्थापित है।

❖ **इस्लामी प्रभाव (अरबी-फारसी लिपि, चांद-सितारा, अन्य प्रतीक)**

चित्र: चित्तौड़ टकसाल का आलमगीर द्वितीय नामक रजत सिक्का

मेवाड़ की सिक्का परंपरा में मुग़लों और इस्लामी संस्कृति का प्रभाव 16वीं–18वीं शताब्दी के दौरान स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जब मेवाड़ मुग़ल आधिपत्य में आया (विशेषकर बादशाह अकबर द्वारा 1568 में चित्तौड़ विजय के बाद), तब स्थानीय टकसालें बंद हुईं और मुग़ल सिक्के चलन में आए। बाद में संधियों के तहत मेवाड़ को अपनी टकसालों में सीमित स्वायत्तता मिली, जहाँ सिक्के तो ढाले जाते थे किन्तु उन पर इस्लामी बादशाह का नाम और उपाधि खुदी होती थी। इस श्रेणी में तीन मुख्य तत्व ध्यान देने योग्य हैं – (1) सिक्कों पर अरबी-फारसी लिपि का प्रयोग, (2) इस्लामी धार्मिक प्रतीक जैसे चांद-सितारा का अंकन, तथा (3) सिक्कों की डिजाइन में इस्लामी शैली या मिश्रित रूपांकन।

अरबी-फारसी लिपि एवं लेख – मेवाड़ के मुग़ल-संघीय काल के सिक्कों पर अरबी या फ़ारसी में लिखित क़ुरानी पद्यांश नहीं बल्कि बादशाह के नाम और ख़िताब अंकित होते थे। उदाहरणस्वरूप, 18वीं सदी में मेवाड़ की चित्तौड़ी, भीलवाड़ी और उदयपुरी टकसालों से जो चाँदी के रुपये जारी हुए, उन पर मुग़ल सम्राट शाह आलम द्वितीय का नाम फ़ारसी लिपि में खुदा मिलता है। इसी तरह, कुछ सिक्कों पर पूर्ववर्ती बादशाह आलमगीर द्वितीय (मुहम्मद आज़म) या अन्य सम्राट का नाम अंकित था। इन सिक्कों के एक पहलू पर संपूर्ण लेख फ़ारसी में होता, जिसमें बादशाह का नाम, उपाधि, सन् (हिजरी/इलाही) और कभी-कभी कालिमा या दुआ-इबारत होती थी (हालांकि राजपूताना के अधीनस्थ सिक्कों पर धार्मिक कलिमा कम ही डाली जाती थी, अधिकतर शाही नाम और उपाधियाँ ही लिखी गयीं)। सिक्कों के दूसरे पहलू पर कभी-कभी टकसाल का नाम या कोई निशान होता। उदाहरण के लिए, उदयपुर टकसाल के सिक्कों पर फ़ारसी शब्द के साथ एक छोटे फूल की टहनी (sprig) का निशान था जो टकसाल-चिन्ह था। अरबी-फ़ारसी लिपि का प्रयोग अपने आप में इस्लामी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता था – सुलेख (कैलिग्राफी) की सुंदरता और शाह के प्रति निष्ठा का प्रदर्शन। मेवाड़ के शासकों ने इस्लामी लेखन को सिक्कों पर स्थान देकर राजनैतिक अधीनता मान्य की, पर साथ ही कई बार स्थानीय प्रतीकों को दूसरे पहलू पर जोड़कर संतुलन बनाए रखा। एक उदाहरण 18वीं सदी का तांबे का पैसा है, जो सामने से

तो मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय के नाम की नक़ल करता है, लेकिन विपरीत तरफ एक झंडा या त्रिशूल जैसा प्रतीक अंकित है। ऐसे सिक्के स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि मेवाड़ की मुद्रा में मुग़ल शैली और स्थानीय हिंदू प्रतीक एक-साथ मेल बिठा रहे थे – एक तरफ फारसी लिपि तो दूसरी तरफ राजपूती त्रिशूल या ध्वज। यह डिजाइन इस्लामी और राजस्थानी परंपराओं की समन्वयवादी प्रकृति को दर्शाती है।

चाँद-सितारा और अन्य इस्लामी प्रतीक – इस्लामी दुनिया में अर्धचंद्र और सितारा का चिह्न आस्था और सत्ता का प्रसिद्ध प्रतीक रहा है, जिसका उपयोग कई मुस्लिम शासकों ने अपने ध्वज और सिक्कों पर किया। यद्यपि मुग़ल काल के अधिकांश सिक्कों पर चाँद-सितारा का प्रत्यक्ष अंकन विरल है (क्योंकि मुग़ल सिक्कों की शैली ज्यादातर सुलेख और फूल-बूटों तक ही सीमित रही), फिर भी मेवाड़ के सिक्कों पर कुछ अवसरों पर अप्रत्यक्ष रूप से यह प्रतीक दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, मेवाड़ के पुराने तांबे सिक्कों पर सूर्य के साथ चंद्रमा का चिह्न भी उकेरा जाता था। अकेला अर्धचंद्र हिंदू प्रतीक (शिव के मस्तक का चंद्र) भी हो सकता है, परंतु जब इसे सितारे के साथ देखा जाए तो इसका आशय इस्लामी हो जाता है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार 19वीं सदी में मेवाड़ रियासत के एक आधे रुपये के सिक्के के रिवर्स पर अलंकारिक त्रिशूलाकार मंदिर प्रतीक के साथ छोटे चांद और तारा भी दर्शाए गए हैं (संभवतः श्रीवत्स या त्रिपुण्ड डिजाइन के आसपास)। यह संकेत करता है कि ब्रिटिश काल से ठीक पहले मेवाड़ के सिक्कों में इस्लामी डिज़ाइन तत्त्वों को कलात्मक संतुलन के लिए प्रयोग किया गया था। इसके अतिरिक्त, कुछ सिक्कों के किनारों पर या दो लाइनों के बीच सितारे अथवा क्रॉसलेट चिह्न भरे गए हैं, जो इस्लामी ज्योतिष या टकसाल चिह्न हो सकते हैं। सिक्कों पर इस तरह के चाँद-तारा या सितारा चिह्न धार्मिक संदेश के रूप में सीधे कुरान या इस्लाम का प्रचार नहीं करते थे, बल्कि यह दिखाते थे कि सिक्का जारी करने वाला सत्ता केंद्र इस्लामी दुनिया की परंपराओं से परिचित है और उन्हें सम्मान देता है। जब बाद में मेवाड़ ब्रिटिश आधिपत्य में आया (1818 के संरक्षण संधि के बाद), तब इन इस्लामी प्रतीकों का प्रयोग धीरे-धीरे कम होकर अंग्रेज़ी अनुवर्ती प्रतीकों (जैसे मुकुट या जॉर्ज पंचम की प्रतिमा) से प्रतिस्थापित हो गया। फिर भी, मुग़ल प्रभाव काल के मेवाड़ी सिक्के एक विशिष्ट सांस्कृतिक समन्वय को प्रदर्शित करते हैं, जहाँ इस्लामी चिह्न स्थानीय हिंदू प्रतीकों के साथ एक ही मुद्रा पर सह-अस्तित्व में थे।

स्थानीय परंपराओं के साथ अंतःक्रिया – मेवाड़ के सिक्कों पर इस्लामी प्रभाव सिर्फ प्रतीकों तक सीमित नहीं था, बल्कि नारे और मान्यताओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति में भी था। कुछ सिक्कों पर फ़ारसी में ऐसे वाक्यांश मिलते हैं जिनका आशय ईश्वर की महानता या शाह की विश्वव्यापी सल्तनत बताना होता था। उदाहरणतः, उदयपुर टकसाल के सिक्कों पर "दार अल-खिलाफत शाहजहाँबाद" जैसे कल्पित टकसाल नाम खुदे मिले हैं, जिसका अर्थ है "शाहजहाँबाद (दिल्ली) ख़िलाफ़त की राजधानी" – ये शब्दावली मुग़ल बादशाहत के दावे को दर्शाती थी, भले वास्तविक टकसाल मेवाड़ में थी। स्थानीय राजपूत शासकों ने इन सिक्कों को चलन में स्वीकार कर यह संदेश दिया कि वे नाममात्र को सही, मुग़ल बादशाह के अधीन हैं, जबकि दूसरी ओर उन्होंने स्थानीय तांबे सिक्कों (जैसे उदयपुरी ढीगला, त्रिशूलिया, नाथद्वारिया इत्यादि) को जारी रखकर अपनी परंपरा भी जीवित रखी। इन स्थानीय सिक्कों पर कभी त्रिशूल, वृक्ष आदि हिंदू प्रतीक होते, तो कभी अस्पष्ट फारसी अक्षर या शब्द – यह मिश्रित शैली मेवाड़ की मुद्रा व्यवस्था की द्विविध प्रकृति को दिखाती है। कुल मिलाकर, मेवाड़ के सिक्कों पर इस्लामी प्रतीकों और शैलीगत तत्वों का समावेश उस युग की वास्तविकता का परिचायक है जिसमें राजनीतिक अधीनता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान, दोनों प्रक्रियाएँ समानांतर चल रही थीं। सिक्कों के माध्यम से धार्मिक संदेशों का यह संगम दर्शाता है कि मेवाड़ की संस्कृति में बाहरी प्रभावों को आत्मसात करने की क्षमता थी, जबकि अपनी पारंपरिक जड़ों को भी संजोए रखा गया।

5. सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और उसका समाजशास्त्रीय संदर्भ

❖ मेवाड़ के सिक्कों पर धार्मिक-प्रतीक एवं सांस्कृतिक संदेश

मेवाड़ (उदयपुर) रियासत की मुद्रा पर पारंपरिक धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीक प्रमुखता से अंकित रहते थे, जो शासकों द्वारा जन मानस को धार्मिक सहिष्णुता व राजसत्ता की स्वीकृति का संदेश देते थे। प्रारंभिक काल के मेवाड़ी सिक्के पूरी तरह अनलिखित होते थे; इनमें मानव, पशु-पक्षी, सूर्य-चंद्र, धनुष, वृक्ष आदि प्रतीक उकेरे मिलते हैं। उदाहरणतः अमितेश कुमार (IGNCA) के अनुसार प्राचीन मेवाड़ के चांदी-ताम्बे के सिक्कों पर सूर्य–चंद्र, वनस्पति और धनुष-बाण के चिन्ह अंकित थे। बाद के काल में महाराणा कुम्भा से लेकर भीम सिंह तक के सिक्कों पर 'एकलिंगजी का दास' की लेखनी तथा शिव के त्रिशूल, नंदी और पार्वती के आभूषण जैसे चिन्ह दिखने लगे हैं।

उदाहरण स्वरूप महाराणा भीम सिंह (१७७८–१८२८) ने शाह आलम नाम के 2 पैसे के ताम्बे के सिक्के पर शिव का त्रिशूल उकेरवाया। इसी प्रकार कई मेवाड़ी मुद्रा पर स्वास्तिक (शुभ प्रतीक) और नंदी (शिव के वाहन) छपे मिलते हैं। फोरोनम संकलन के अनुसार मेवाड़ के सिक्कों में अक्सर "त्रिशूल या देवता की छवि" जैसे हिंदू प्रतीक अंकित होते थे। महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के ताम्बे के सिक्कों पर स्वास्तिक और त्रिशूल दोनों अंकित पाये गए हैं। इस तरह के प्रतीक शासक की धार्मिक आस्था और वैदिक परंपरा को दर्शाते थे। वहीं, जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं भी बाद के सिक्कों पर दिखाई देने लगीं, जो मेवाड़ में जैन मत के बढ़ते प्रभाव का संकेत थीं। (ऐसा इतिहासग्रंथ भी सुझाते हैं कि पद्मिनी जौहर के बाद लगभग तीन सौ वर्ष बाद राजपरिवार की जैनधर्म में ओर झुकाव बढ़ा था।) इन प्रतीकों से स्पष्ट होता है कि मेवाड़ी शासक स्वयं को शिव या विष्णु आदि लोकदेवताओं का सेवक-प्रतिनिधि मानते थे, और दिव्य शक्तियों के आशीर्वाद से राज्य संचालन का दावा करते थे।

❖ लोक परंपराओं में प्रतीकों का प्रतिनिधित्व

ये धार्मिक-प्रतीक जनजीवन में भी गहराई से समाए हैं। राजस्थान में त्रिशूल का महत्व लोकश्रद्धा में अटूट है – शिव मंदिरों के गर्भगृह में या मेला-उत्सव में त्रिशूलावली झंडी एवं मूर्तियों पर साज सजावट में प्रयुक्त होती है। स्वास्तिक को मंगलचिन्ह मानकर घर-दीवारों, मंडपों तथा जयमाला की पटलिकाओं पर बनाया जाता है। मेवाड़ के प्राचीन शिवालयों में मूर्तिपूजक नंदी प्रायः स्थापित रहता है, जो देवस्थान की भव्यता को दर्शाता है। जैन समुदाय के मेला-जुलूसों और पर्वों (जैसे महावीर जयंती) में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां और कलशवाहन चलाए जाते हैं, जो सामाजिक स्वीकार्यता के प्रतीक हैं। चक्र (विष्णु का चक्र या कलिकालीन अशोक चक्र) लोककला में रांगोली तथा झंडों पर प्रचलित है। ऐतिहासिक लोककथाओं एवं लोकगीतों में भी देवी-देवता और उनके प्रतीकों का उल्लेख मिलता है। उदाहरणतः राजस्थानी लोकगीतों में देवता-धनुर्धारी शिव की वंदना में त्रिशूल का विशेष उल्लेख रहता है, तो माँ भवानी देवी के देवस्थान में शंख-चक्र आदि सजावट में जुड़े रहते हैं। इन प्रतीकों की व्यापक उपस्थिति से स्पष्ट है कि मुद्रा पर जो चित्र अंकित थे, वे ग्राम-स्तर तक सहज पहचान वाले धार्मिक चिह्न थे।

❖ प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक संदेश

मुद्राओं पर इस्तेमाल चिन्ह सामाजिक समरसता और राजतंत्र के वर्चस्व दोनों ही अर्थों को व्यक्त करते थे। चूंकि मेवाड़ एक बहुधार्मिक क्षेत्र था, अतः सिक्कों पर स्वास्तिक जैसे सार्वभौमिक शुभचिन्ह और जैन-मूर्ति जैसे प्रतीकों का समावेश विभिन्न वर्गों में बनाए रखने में सहायक था। उदाहरणतः जैनधर्म की आस्था को सम्मान देते हुए जैन तीर्थंकरों का अंकन, जन समुदाय को संदेश देता था कि महाराणा राजसिंह आदि जैन प्रवृत्ति से प्रभावित शासनकर्ता हैं। दूसरी ओर त्रिशूल, नंदी, चक्र एवं सूर्य–चंद्र जैसे प्रतीक स्वयं रियासत की वैदिक/वैष्णव–शैव परम्परा को प्रकट करते थे और राजा को धार्मिक अधिकार प्राप्त शासक के रूप में प्रस्तुत करते थे। युगानुकूल परिवर्तन में ब्रिटिश राज के साथ अहदनामा के बाद महाराणा स्वरूप सिंह के सिक्कों पर "दोस्ती लंघन" (मित्रता सेतु) लिखवाना दर्शाता है कि सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन विदेश नीति भी दर्शाई गयी – यानी रियासत ने ब्रिटिश साथियों के साथ दोस्ती का ऐलान किया। इस प्रकार सिक्कों पर काष्ठित प्रतीकों और शिलालेखों के संयोजन से राजसत्ता की स्थापना एवं धार्मिक सहिष्णुता दोनों का ही संदेश जनता को मिलता था।

❖ प्रतीकों की पहचान और लोकप्रियता

मेवाड़ी सिक्कों पर अंकित धार्मिक चिन्ह जनजीवन में गहरे रूप से रचे-बसे थे, इसलिए ये मुद्रा और समाज के बीच सेतु का काम करते थे। चूँकि ये प्रतीक जन-मानस के लिए परिचित थे, इसलिए राजसी पहचान सिक्कों के माध्यम से जनमानस तक सहज ही पहुँच गयी। महाराणा भीम सिंह द्वारा चंद्रकुंवर बाई की स्मृति में जारी किये गए "चांदोड़ी" सिक्कों पर बेल-बूटे के कलात्मक चिन्ह बने थे, जो आज भी शादी-विवाह और दान के समय चढ़ावे के रूप में प्रयुक्त होते हैं। यह उदाहरण दर्शाता है कि मेवाड़ी मुद्रा धार्मिक एवं लोक परंपराओं में शामिल हो गई थी; इन सिक्कों को आज भी धार्मिक दान या विवाह समारोहों में विभूषण के रूप में स्वीकृत किया जाता है। इसी तरह, बारहने त्यौहार में स्वास्तिक और त्रिशूल की आकृति गली-गली सजावट में बनायी जाती है। राज्य द्वारा अपनाई गई दीर्घकालीन सांस्कृतिक नीतियों के चलते ये धार्मिक प्रतीक रियासत और समाज को जोड़ने का माध्यम बनते गए। ऐतिहासिक दृष्टांतों से ज्ञात है कि मेवाड़ के शासनकाल में "त्रिशूलिया" नामक तांबे के सिक्के प्रचलित हुए जिन पर साफ़ तौर पर त्रिशूल का चिन्ह था; इसने आम जनता को राजा की शैव परंपरा से परिचित किया। इसी प्रकार "सारुपसाही" नामक रुपया पर उकेरा गया चित्रकूट-उदयपुर और "दोस्ती लंघन" लेखन ने लोक में यह संदेश भरा कि महाराणा ब्रिटिश मित्रता को महत्व देते हैं।

6. विश्लेषण

❖ **प्रतीकों की ऐतिहासिक निरंतरता**

मेवाड़ की मुद्रा में धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों की उपस्थिति सदियों पुरानी रही है। गहलोत वंश से निकलने वाले सिसोदिया राजपूतों ने शिव के एक रूप 'एकालिंगजी' को अपना कुलदेव माना और उसकी पूजा की परंपरा को जारी रखा। वास्तव में मेवाड़ के सिक्कों पर स्वयं 'एकालिंग' नाम अंकित मिलता है, जो शिव का ही नाम है और जिस नाम से महाराणा शासन करते थे। यही कारण है कि राणा कुम्भा (15वीं सदी) के सिक्कों की श्रृंखला एक सदी से अधिक समय तक जारी रही, संभवतः तब तक जब तक मुगल सम्राट अकबर ने 1568 ई. में चित्तौड़ पर विजय प्राप्त नहीं किया। अकबर के चित्तौड़ विजय के बाद प्रारंभिक दो शताब्दियों तक मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में सिक्का-निर्माण बंद रहा। अंततः 18वीं सदी के मध्य में सिक्का-मुद्रण पुनः आरंभ हुआ। उस दौर से भिम सिंह (1777–1828) के ताम्र सिक्के जारी हुए, जिन पर ध्वज (झंडा), त्रिशूल एवं झाड़ जैसे पारंपरिक प्रतीक अंकित पाए गए। उदाहरणस्वरूप भिम सिंह के दो पैसे के ताम्र सिक्के पर पीछे त्रिशूल की आकृति उकेरी दिखती है जबकि सामने शाह आलम द्वितीय (मुगल सम्राट) का नाम लिखा है। इन प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट है कि मेवाड़ ने अपने प्राचीन धार्मिक प्रतीकों को समय-समय पर बनाए रखा है।

इतिहासकार बताते हैं कि मेवाड़ी मुद्राओं पर प्रायः 'श्री' या 'जय' जैसे संस्कृतात्मक शब्द अंकित रहते थे, जो शुभकामना के प्रतीक थे। उदाहरणतः 16वीं सदी के सिक्कों पर 'श्री राणा सांग्राम' अंकित मिलता है, जो राजा का नाम तथा राजपरिवार की परंपरा को दर्शाता है। शिव और अन्य देवताओं से जुड़े प्रतीकों (त्रिशूल, नंदी) के साथ-साथ सूर्य या पुष्पमण्डल जैसी आकृतियाँ भी सिक्कों पर नजर आती रहीं, जो समृद्धि और सौभाग्य के प्रतीक माने जाते हैं। इन मुद्राओं पर उकेरी गई लिपि और सजावट में राजा की दिव्य आस्था और सामाजिक मान्यताओं की ऐतिहासिक निरंतरता परिलक्षित होती है। भले ही समय बदलता गया हो, मेवाड़ी सिक्कों में शिव-संबंधी प्रतीकों की विरासत अक्षुण्ण दिखती रही है।

❖ **धार्मिक सहिष्णुता और शक्ति-प्रदर्शन के रूप में सिक्के**

मेवाड़ के महाराजा सिक्कों के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष सहिष्णुता और वैधानिक शक्ति दोनों ही प्रदर्शित करते थे। हिंदू राज्य होने पर भी मेवाड़ ने जैन धर्म को संरक्षण दिया था। इसलिए संभव है कि सिक्कों पर जैन तीर्थंकरों की प्रतिमा या स्वास्तिक जैसे जैन-धार्मिक प्रतीक भी अंकित था, जिससे जैन समुदाय को सम्मान मिलता था। इसी प्रकार चंद्र-सितारे (चाँद-सितारा) को मुस्लिम प्रतीक माना जाता है; विशेष अवसर पर इसका उपयोग भी सिक्कों पर हुआ था। सिक्कों में इन बहु-धार्मिक प्रतीकों के सम्मिश्रण से यह संकेत जाता है कि राज्य सभी समुदायों का सम्मान करता था। उदाहरणार्थ, देवी-देवताओं के चिन्ह अथवा पुष्प-मण्डल मुद्राओं पर अंकित होने से संबंधित समुदायों को समृद्धि-संदेश के साथ-साथ राजकीय सहानुभूति मिलती थी।

एक ही सिक्के पर हिंदू और मुस्लिम दोनों प्रभाव दिखाना महाराणा की समन्वयपूर्ण रणनीति का हिस्सा था। महाराणा भिम सिंह ने अपने सिक्कों पर मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय का नाम अंकित कर सम्राज्य से अपने संबंध स्वीकार किए। वहीं उन सिक्कों पर त्रिशूल जैसे हिंदू प्रतीक भी अंकित थे, जिससे शिव-आशीर्वाद का भाव कायम रहा। परिणामतः सिक्के एक ही समय में दोहरे संदेश देते हैं: एक ओर शिव (ईश्वर) का आशीष और दूसरी ओर मुगल बादशाह की मान्यता। इसी प्रकार राणा सांग्राम सिंह के सिक्कों पर देवनागरी में उनका नाम अंकित था, और दूसरी ओर फारसी मुहर 'मलवा सल्तनत शैली' में ढाली गई थी। सिक्कों में प्रयुक्त भाषा, प्रतीक और उद्धरण दोनों धर्मों को संबद्ध करते हुए शासन की वैधानिकता और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश एक साथ पहुंचाते थे।

इस प्रकार सिक्कों के माध्यम से महाराणा ने जनता को यह संदेश दिया कि उनकी सत्ता को न तो ईश्वर की संप्रभुता से अपंग समझा जाए और न ही सम्राट की वैधानिकता से इंकार हो। सिक्कों पर प्रयुक्त प्रतीकात्मक भाषा इस दोहरे संदेश को जन-जन तक संप्रेषित करती थी। परिणामस्वरूप मेवाड़ी सिक्के धर्मनिरपेक्ष सहिष्णुता एवं राजकीय वैधता दोनों का झंडाबरदार बने रहे।

❖ **सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सिक्कों की भूमिका**

सिक्कों को केवल आर्थिक लेन-देन के साधन की तरह नहीं देखा जाना चाहिए; वे तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और लोक-स्मृति को भी संजोते हैं। सिक्कों पर उकेरे शिलालेख, वर्षांक और आकार तत्कालीन भाषा, धर्म, कला तथा सामाजिक विचारों का दस्तावेज होते हैं। उदाहरणतः राणा सांग्राम सिंह के सिक्कों पर देवनागरी लिपि में 'श्री राणा सांग्राम' लिखा मिलता है, साथ में फारसी मुहर भी होती है। इस द्विभाषी अभिलेख से दो सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मिश्रण उजागर होता है। इसी तरह, महाराणा फत्तेह सिंह (1942 विक्रम संवत) के एक ताम्र सिक्के

पर देवनागरी में 'चित्तौड़' तथा 'उदयपुर' नाम अंकित हैं और पारम्परिक पुष्प आकृति उकेरी हुई है। इन अभिलेखों से मालूम होता है कि सिक्के तत्कालीन राजधानियों और उनकी सौंदर्य-परंपराओं को भी दर्शाते हैं।

सिक्कों में अंकित प्रतीक और आकृतियाँ लोक आस्था की धरोहर बनती रहीं। उदाहरणार्थ, सिक्कों पर कमल या चक्र का चित्र समृद्धि का प्रतीक रहा, जबकि त्रिशूल या पुष्पादि चिन्ह राजपूताना परंपराओं और उत्सवों के बोधक हैं। सिक्के लोक-समूह में सांझा सांस्कृतिक धरोहर पहुंचाते थे; ये दैनिक लेन-देन के दौरान भी सामूहिक विश्वास जगाए रखते थे। संग्रहालयों एवं अभिलेखागारों में संरक्षित ये सिक्के आज इतिहासकारों को तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति का गहन अध्ययन करने में सहयोग देते हैं। नुमिस्मैटिक्स (मुद्राविज्ञान) के शोध में मेवाड़ के सिक्के एक बहुमूल्य सांस्कृतिक दस्तावेज मान लिए गए हैं, जिनमें तत्कालीन कला, भाषा, और परंपरा का खाका छपा मिलता है।

इस प्रकार, मेवाड़ की मुद्रा केवल आर्थिक प्रमाणपत्र नहीं रही, बल्कि शासन-नीति एवं धार्मिक मान्यताओं का चलता-फिरता दस्तावेज भी बनी रही। ये सिक्के राजसी परंपराओं, सामूहिक आस्थाओं एवं शक्ति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाते हुए मेवाड़ की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते रहे। इनके अध्ययन से मेवाड़ के इतिहास एवं संस्कृति की गहन विवेचना की सुविधा होती है, इस प्रकार वे लोकस्मृति के अमूल्य साक्ष्य हैं।

7. निष्कर्ष

मेवाड़ के सिक्कों पर अंकित धार्मिक प्रतीकों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि ये मुद्राएं केवल आर्थिक लेन-देन का साधन नहीं थीं, बल्कि वे राजशक्ति, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्त माध्यम भी थीं। त्रिशूल, नंदी, स्वास्तिक, सूर्य, जैन प्रतिमा और चक्र जैसे प्रतीकों के माध्यम से मेवाड़ के शासकों ने न केवल अपनी धार्मिक आस्थाओं को सार्वजनिक किया, बल्कि एक बहुधार्मिक, सहिष्णु और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज की परिकल्पना को भी मूर्त रूप दिया। ये प्रतीक तत्कालीन समाज के लिए सांस्कृतिक संवाद के पुल का कार्य करते थे, जिससे न केवल राजा की वैधता स्थापित होती थी, बल्कि समाज में विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समरसता और पारस्परिक सम्मान की भावना भी पल्लवित होती थी। सिक्कों पर प्रयुक्त प्रतीकों की ऐतिहासिक निरंतरता और कला में उनकी सूक्ष्मता यह दर्शाती है कि मेवाड़ की शासन-व्यवस्था परंपरा और नवाचार का संतुलित रूप थी। मुग़ल आधिपत्य के दौरान भी जब मेवाड़ की स्वायत्तता सीमित थी, तब भी स्थानीय प्रतीकों और भाषा का प्रयोग सिक्कों पर बना रहा, जो सांस्कृतिक अस्मिता और विरासत की निरंतरता का प्रमाण है। अतः यह कहा जा सकता है कि मेवाड़ के सिक्के न केवल राजनैतिक इतिहास के प्रमाण हैं, बल्कि वे धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के अमिट दस्तावेज भी हैं, जो वर्तमान पीढ़ी को अपनी गौरवशाली परंपराओं से जोड़ने का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अल्तेकर, ए. एस. प्राचीन भारत की मुद्राएं (Coinage of Ancient India)। वाराणसी: बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 1957।
2. डायल, जॉन। लिविंग विदआउट सिल्वर: अर्ली मीडियवल नॉर्थ इंडिया का मौद्रिक इतिहास। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990।
3. सिंह, उपिंदर। प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास। दिल्ली: पियरसन एजुकेशन इंडिया, 2008।
4. माथुर, दयाशंकर। मेवाड़ का प्राचीन इतिहास। जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1984।
5. जैन, कैलाशचंद्र। राजस्थान के प्राचीन नगर एवं सांस्कृतिक परंपराएँ। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1981।
6. त्रिवेदी, हरीशंकर। राजस्थान के प्राचीन सिक्के। जयपुर: राजस्थान साहित्य अकादमी, 2005।
7. गुप्ता, पी. एल. सिक्के। दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1979।
8. सिंह, के. के. "मेवाड़ की मुद्राओं में धार्मिक प्रतीकवाद।" इंडियन हिस्टॉरिकल रिव्यू, खंड 39, अंक 2, 2012, पृ. 203–220।
9. स्कंद पुराण (अनुवाद: जी. वी. टागरे)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1996।
10. तत्त्वार्थ सूत्र (अनुवाद: नथमल तातिया)। कैलिफोर्निया: जैन पब्लिशिंग कंपनी, 1994।
11. प्रसाद, राजेन्द्र। "भारतीय सिक्कों में धार्मिक प्रतीकों की भूमिका।" न्यूमिज़मैटिक डाइजेस्ट, खंड 42, 2018, पृ. 115–134।
12. श्रीवास्तव, अशोक कुमार। मध्यकालीन भारत की मुद्राएं। दिल्ली: अगम कला प्रकाशन, 2004।
13. भंडारकर, आर. जी. प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास। दिल्ली: राजपाल एंड सन्स, 2016।
14. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI)। मेवाड़ क्षेत्रीय कार्यालय की सिक्का शोध रिपोर्ट, उदयपुर।

15. आचार्य, पी. भारतीय धार्मिक कला की प्रतिमा-विज्ञान (Iconography)। कोलकाता: ईस्टर्न बुक कंपनी, 2001।

16. कुमार, अमितेश। "मेवाड़ राज्य में प्रचलित सिक्के।" IGNCA, 2003, ignca.gov.in/coilnet/rj065.htm।

17. "2 Pies Coin with Trishul." Mintage World, 19 अक्टूबर 2021, https://www.mintageworld.com/media/detail/14764/।

18. "Mewar Coin Catalog." Foronum, https://www.foronum.com/coins-catalog/india-princely-states/categoria-182-mewar।

19. सोमाणी, राम वल्लभ। History of Mewar: From Earliest Times to 1751 A.D. जयपुर: रांका एंड कंपनी, 1975।

20. मेहता, सुमित। "मेवाड़ की रावल शाखा के सिक्के (1303 ई. तक)।" Inspira – Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME), खंड 10, अंक 1, जनवरी 2020, पृ. 113–115। https://www.inspirajournals.com/

21. सिंह, विनीता। "पद्मावती के जौहर के बाद मेवाड़ में बढ़ने लगा था जैन धर्म का प्रभाव, शाही सिक्कों से हुआ खुलासा।" राजस्थान पत्रिका (कोटा), 18 नवम्बर 2017, https://www.patrika.com/।

22. "मेवाड़ राज्य में प्रचलित सिक्के।" भारतकोश – ज्ञान का हिन्दी महासागर, 2021, https://bharatdiscovery.org/।

23. "The Coin Galleries: Mewar." CoinIndia Online, 2019, https://coinindia.com।

24. एंडरसन, जोएल। "Coins of India – Mughal and Princely States." JoelsCoins, 2021, https://joelscoins.com।

25. जैन, शैलेष। "मेवाड़ के जैन-प्रभावित सिक्के।" Journal of the Oriental Numismatic Society, अंक 231, शीतकालीन 2017, लंदन।